Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

Received: 09/April/2026 IJASR: 2026; 5(3):108-112 Accepted: 14/May/2026

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के वैचारिक स्तंभ: क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा का ऐतिहासिक एवं सांगठनिक मूल्यांकन

*[1]डॉ. अमित कुमार ताम्रकार

*[1]सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, PMCoE स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नात. महाविद्यालय, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश भारत।

सारांश

भगवती चरण वोहरा के लिए, क्रांति का अर्थ भारत में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों का पूर्ण रूपांतरण था। महान क्रांतिकारी भगवती चरण बोहरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन प्रकाश-स्तंभों में से हैं, जिन्होंने न केवल वैचारिक धरातल पर क्रांति को परिभाषित किया, बल्कि अपने प्राणों की आहुति देकर उसे सींचा भी। वे 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) के मुख्य रणनीतिकार, विचारक और प्रचारक थे। भारतीय सशस्त्र क्रांति का इतिहास प्रायः केवल पिस्तौल और बम की गूंज तक सीमित कर दिया जाता है, परंतु इस क्रांति के पीछे एक अत्यंत परिपक्व समाजवादी और बौद्धिक चेतना कार्य कर रही थी। भगवती चरण बोहरा इसी बौद्धिक चेतना के मुख्य केंद्र बिंदु थे। भगवती चरण वोहरा का गुप्त जीवन अत्यंत सक्रिय और जोखिमों से भरा था। दिल्ली असेंबली बम कांड के बाद वोहरा जी चंद्रशेखर आज़ाद के दाहिने हाथ बन गए। वे वैचारिक मोर्चे पर महात्मा गांधी जैसे वैश्विक नेताओं को तार्किक उत्तर देने में सक्षम थे और सांगठनिक स्तर पर दल की रीढ़ थे। मृत्यु के अत्यंत निकट होने पर भी उनके चेहरे पर दिव्य मुस्कान थी। उनकी शहादत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक ऐसी अपूरणीय क्षति थी, जिसने इतिहास की धारा को प्रभावित किया।

मुख्य शब्द: भगवती चरण वोहरा, नौजवान भारत सभा, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, द फिलॉसफी ऑफ द बम, दुर्गा भाभी, समाजवादी क्रांति।

प्रस्तावना

सन् 1920 से 1930 का दशक भारत की स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण और करवटें लेने वाला था। असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद देश के युवाओं में उपजी हताशा ने एक नए विकल्प की खोज की, जिसने सशस्त्र क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। इस कालखंड में 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) ने स्वतंत्रता के अर्थ को केवल 'सत्ता परिवर्तन' से आगे बढ़ाकर 'सामाजिक और आर्थिक न्याय पर आधारित समाजवादी समाज' के रूप में परिभाषित किया। इस वैचारिक परिवर्तन की रीढ़ भगवती चरण वोहरा थे। वे एक धनी परिवार से संबद्ध होने के बावजूद अपनी संपूर्ण संपत्ति, मेधा और अंततः प्राणों को देश की वेदी पर होम करने वाले अनूठे क्रांतिकारी थे।

भगवती चरण वोहरा भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के भगत सिंह युग के कम ज्ञात व्यक्तियों में से एक हैं। वे प्रमुख प्रचारक और संदेशवाहक थे तथा आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण विचारकों में से एक थे। भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जितने लोकप्रिय न होते हुए भी, उन्होंने तीन महत्वपूर्ण वैचारिक/संगठनात्मक दस्तावेजों का सह-लेखन किया—नौजवान भारत सभा और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्र और एचएसआरए का सबसे प्रसिद्ध दस्तावेज, "बम का दर्शन", जिसमें क्रांतिकारियों और महात्मा गांधी के बीच एक बहस का वर्णन है।

जलियांवाला बाग हत्याकांड का किशोर वोहरा पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके बाद वे उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन में जुट गए। लाहौर के नेशनल कॉलेज में छात्र रहते हुए उन्होंने गांधी जी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में भाग लिया । कई समकालीनों की तरह, उनका क्रांतिकारी जीवन चौरी-चौरा कांड के बाद इस आंदोलन के अचानक समाप्त होने के बाद शुरू हुआ। इस वापसी को, विशेष रूप से कॉलेज जाने वाले युवाओं द्वारा, विश्वासघात के रूप में देखा गया।

कांग्रेस और गांधी जी से मोहभंग होने के बाद, वोहरा ने एक बौद्धिक यात्रा शुरू की जिसमें मार्क्सवादी विचारधारा ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया, मुख्य रूप से 1917 की रूसी क्रांति की सफलता के कारण। उन्होंने सोवियत संघ में एम.एन. रॉय के कम्युनिस्ट समूह से संपर्क किया और रॉय द्वारा संपादित पत्रिका "वैनगार्ड" और अन्य मार्क्सवादी साहित्य की तस्करी और वितरण शुरू किया। हालांकि, उस समय भारत में कम्युनिस्टों ने अभी-अभी संगठित होना शुरू किया था। वोहरा हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) के नेतृत्व वाले भूमिगत क्रांतिकारी आंदोलन की ओर आकर्षित हुए।

*Corresponding Author: डॉ. अमित कुमार ताम्रकार

उन्होंने जयचंद्र विद्यालंकार के नेतृत्व में इसकी पंजाब इकाई में शामिल हो गए, जिन्होंने वोहरा को नेशनल कॉलेज में पढ़ाया था।

इतिहास के नेपथ्य का नायक

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल उन चेहरों तक सीमित नहीं है जो मंचों पर दिखाई दिए, बल्कि इसकी वास्तविक शक्ति वे 'आधारशिला के पत्थर' थे जिन्होंने नींव में खुद को दफन कर लिया ताकि आज़ादी का भव्य महल खड़ा हो सके। 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' (HSRA) के इतिहास में जहाँ चंद्रशेखर आज़ाद को सैन्य कमांडर और भगतसिंह को क्रांति का प्रतीक माना जाता है, वहीं भगवतीचरण वोहरा इस आंदोलन के 'संचालक मस्तिष्क' और मुख्य मार्ग-निर्देशक थे। वे एक ऐसे विलक्षण क्रांतिकारी थे जिन्होंने न केवल पिस्तौल और बम की राजनीति को वैचारिक धार दी, बल्कि भारत में समाजवाद और जनक्रांति की जड़ों को भी सींचा। उनका संपूर्ण जीवन सस्ती शोहरत के कोलाहल से दूर रहकर गुप्त रूप से राष्ट्रवेदी पर सर्वस्व अर्पण करने की गाथा है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक जीवन और बौद्धिक चेतना का उदय

भगवतीचरण वोहरा का जन्म वर्ष 1902 में आगरा के एक संपन्न गुजराती परिवार में हुआ था। उनके पिता ब्रिटिश रेलवे में एक उच्च पद पर कार्यरत थे, जिसके कारण उनका स्थानांतरण लाहौर हो गया और भगवतीचरण का बचपन व प्रारंभिक शिक्षा लाहौर में ही संपन्न हुई। उनका परिवार आर्थिक रूप से बेहद समृद्ध और सुखी था। तत्कालीन समय में जहाँ कुलीन परिवारों के युवक ब्रिटिश सरकार की चाकरी कर ऊँचे पद पाने की लालसा रखते थे, वहीं भगवतीचरण के भीतर एक भिन्न ही अग्नि सुलग रही थी।

लाहौर के नेशनल कॉलेज में प्रवेश उनके जीवन का टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। यहाँ उन्हें प्रोफेसर जयचंद्र विद्यालंकार जैसे प्रखर राष्ट्रवादियों का सानिध्य मिला, जिन्होंने युवाओं के मानस में क्रांति के बीज बोए। इसी कॉलेज के लॉन में बैठकर वे देश की पराधीनता की कड़ियों को तोड़ने का स्वप्न देखा करते थे। भगवतीचरण बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे गंभीर अध्येता, कुशाग्र वक्ता और कुशल लेखक थे। लाला लाजपतराय उनकी अद्भुत बौद्धिक क्षमता के कायल थे, यही कारण था कि लालाजी ने अपने विशाल पुस्तकालय के द्वार इस युवा के लिए हमेशा खुले रखे। यहाँ बैठकर भगवतीचरण ने विश्व की महान क्रांतियों (विशेषकर रूसी क्रांति) का गहन अध्ययन किया, जिससे उनके भीतर यह दृढ़ विश्वास पैदा हुआ कि बिना वैचारिक और सामाजिक क्रांति के केवल राजनैतिक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।

भगतसिंह से मिलन और 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना

भगवती चरण बोहरा केवल एक सैनिक नहीं, बल्कि उच्च कोटि के विद्वान थे। भगवती चरण वोहरा नेशनल कॉलेज, लाहौर के बौद्धिक वातावरण की उपज थे। उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज से बीए की उपाधि प्राप्त की थी। नेशनल कॉलेज में ही भगवतीचरण की भेंट सरदार भगतसिंह और सुखदेव से हुई। भगतसिंह और भगवतीचरण के बीच का संवाद भारतीय इतिहास के सबसे रचनात्मक संवादों में से एक है। एक बार कॉलेज के लॉन में चर्चा के दौरान भगतसिंह ने जब संशय जताया कि चूँकि भगवतीचरण गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर चुके हैं, इसलिए क्या वे क्रांति के कठिन और अनिश्चित मार्ग पर चल पाएंगे ? इस पर भगवतीचरण ने जो उत्तर दिया, वह उनके अटूट देशप्रेम को दर्शाता है:

"हम लोग देश के पहले हैं और अपने परिवार के बाद में। मेरा तो यह दृढ़ निश्चय है कि देश की पुकार पर मेरा पूरा परिवार देश के लिए समर्पित हो जाएगा। जब तक गाड़ी धकल रही है, मैं धकेलूँगा और जब आवश्यक होगा, मैं भी फरार हो जाऊँगा।"

वोहरा जी का स्पष्ट मानना था कि कोई भी सशस्त्र क्रांति तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक उसे जनसामान्य और विशेषकर युवाओं का वैचारिक समर्थन प्राप्त न हो। इसी उद्देश्य से उन्होंने एक द्वि-आयामी (Two-tier) सांगठनिक मॉडल की रूपरेखा तैयार की: "क्रांति का एक रूप भूमिगत (Underground) होना चाहिए जो सैन्य अभियानों और दमनकारी अधिकारियों को दंडित करने का कार्य करे, जबकि दूसरा रूप पूर्णतः खुला (Open) होना चाहिए जो जनता में राजनीतिक और आर्थिक चेतना का प्रसार करे।"

इस वैचारिक स्पष्टता ने दोनों नायकों को एक-दूसरे के अत्यंत निकट ला दिया। क्रांतिकारियों ने महसूस किया कि केवल भूमिगत रहकर छिटपुट घटनाओं से क्रांति सफल नहीं हो सकती; इसके लिए जनता को जगाना होगा। इसी विमर्श से 'नौजवान भारत सभा' का जन्म हुआ। भगतसिंह के सुझाव पर इस संगठन का उद्देश्य-पत्र (Manifesto) और पूर्ण संविधान लिखने का उत्तरदायित्व भगवतीचरण वोहरा को सौंपा गया।

भगवतीचरण द्वारा तैयार किया गया यह घोषणा-पत्र महज़ एक दस्तावेज नहीं, बल्कि भारतीय युवाओं के लिए समाजवाद का घोषणा-पत्र था। इसने 'नौजवान भारत सभा' को केवल लाहौर नहीं, बल्कि पूरे पंजाब और उत्तर भारत का एक खुला, सशक्त राष्ट्रीय मंच बना दिया। इस संगठन ने ही लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध की मुख्य कमान संभाली थी, जिसके दमन के दौरान लाला लाजपतराय पर प्राणघातक लाठियां बरसाई गई थीं।

1926 में जब 'नौजवान भारत सभा' का गठन हुआ, तो भगवती चरण इसके मुख्य सचिव (General Secretary) बने, जबकि भगत सिंह इसके प्रचार सचिव थे। नौजवान भारत सभा के घोषणापत्र (जिसका मसौदा बोहरा जी ने तैयार किया था) के अनुसार, इसका उद्देश्य “भारत में युवाओं, श्रमिकों और किसानों का एक पूर्णतः स्वतंत्र गणराज्य स्थापित करना था।”

वैचारिक दृष्टिकोण: यह संगठन धर्मनिरपेक्षता पर अत्यधिक बल देता था। बोहरा जी का मानना था कि सांप्रदायिकता क्रांति की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है। सभा के सदस्यों के लिए अनिवार्य था कि वे सांप्रदायिक संगठनों से दूर रहें।

सांगठनिक कौशल और द्वि-आयामी दृष्टिकोण

1928 में जब 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HRA) को समाजवादी दिशा देते हुए 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) में बदला गया, तो वैचारिक स्पष्टता लाने का कार्य भगवती चरण बोहरा ने ही किया। चंद्रशेखर आज़ाद उन्हें संगठन का 'दिमाग' मानते थे। वोहरा जी केवल बम बनाने या योजना बनाने वाले क्रांतिकारी नहीं थे, बल्कि वे एचएसआरए के बौद्धिक मार्गदर्शक थे जिन्होंने आंदोलन को केवल "आतंकवाद" के ठप्पे से निकालकर "समाजवादी क्रांति" की ओर मोड़ा।

वित्तीय और रणनीतिक योगदान: बोहरा जी के पिता रेलवे में ऊंचे पद पर थे, जिससे उन्हें विरासत में अच्छी संपत्ति मिली थी। उन्होंने अपनी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 40,000 रुपये, जो उस समय एक विशाल राशि थी) देश की आज़ादी और क्रांतिकारी साहित्य छपवाने के लिए संगठन को दान कर दिया।

HSRA का संगठनात्मक ढांचा]

चंद्रशेखर आज़ाद (सैन्य कमांडर) → सशस्त्र कार्यवाहियां, सुरक्षा

भगवती चरण बोहरा (वैचारिक प्रमुख) → घोषणापत्र, साहित्य रचना, बम निर्माण

सैद्धान्तिक वैचारिकी और ऐतिहासिक दस्तावेज़: 'बम का दर्शन'

क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में भगवतीचरण वोहरा का सबसे बड़ा योगदान उनका लिखित दस्तावेज़ 'बम का दर्शन' (The Philosophy of the Bomb) है।

वैचारिक पृष्ठभूमि

दिसंबर 1929 में क्रांतिकारियों द्वारा वाइसराय लॉर्ड इरविन की ट्रेन को उड़ाने के प्रयास के बाद, महात्मा गांधी ने अपने पत्र 'यंग इंडिया' में 'कल्ट ऑफ दि बॉम्ब' (Cult of the Bomb) शीर्षक से एक लेख लिखा। इस लेख में गांधीजी ने क्रांतिकारी तरीकों की तीखी आलोचना की और उन्हें 'कायरता' व 'जघन्य कृत्य' की संज्ञा देते हुए जनता को उनसे दूर रहने की सलाह दी। इस लेख से क्रांतिकारी खेमे में, विशेषकर चंद्रशेखर आज़ाद में भारी रोष था। वे इन आरोपों का तार्किक और करारा जवाब देना चाहते थे।

लेखन और प्रभाव

आज़ाद के अनुरोध पर भगवतीचरण वोहरा और यशपाल ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में रहते हुए 'फिलॉसाफी ऑफ दि बॉम्ब' नामक लेख तैयार किया। इस लेख में भगवतीचरण की भाषाई गरिमा, तार्किक क्षमता और वैचारिक परिपक्वता अपने चरमोत्कर्ष पर थी। उन्होंने गांधीजी के प्रत्येक आरोप का खंडन करते हुए यह स्पष्ट किया कि क्रांतिकारी हिंसा किसी व्यक्तिगत द्वेष या आतंक फैलाने के लिए नहीं, बल्कि एक अत्याचारी और शोषक सत्ता के अंत के लिए है। उन्होंने लिखा:

- "बम का उद्देश्य समाज में तबाही मचाना नहीं, बल्कि उस अन्यायपूर्ण व्यवस्था का खात्मा करना है जो लाखों इंसानों का खून चूस रही है।"
- "क्रांति से हमारा तात्पर्य केवल सशस्त्र संघर्ष नहीं है। क्रांति का अर्थ है एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना, जो शोषण से मुक्त हो और जिसमें सर्वहारा वर्ग को उसका अधिकार मिले।"

'बम का दर्शन' के मुख्य बिंदु

i). हिंसा बनाम बल (Violence vs Force): बोहरा जी ने स्पष्ट किया कि क्रांतिकारी हिंसा के शौकीन नहीं हैं। उन्होंने लिखा कि जब अन्याय को मिटाने के लिए बल का प्रयोग किया जाता है, तो वह 'न्यायसंगत बल' बन जाता है, न कि 'हिंसा'।

ii). समझौताहीन संघर्ष: उन्होंने गांधी जी की समझौतावादी नीति (जैसे इरविन के साथ बातचीत) की आलोचना की और कहा कि पूर्ण स्वतंत्रता से कम कुछ भी स्वीकार्य नहीं है।

iii). "बम का भय केवल दमनकारी सत्ता और समाज के शोषकों के मन में होता है, जनसामान्य के मन में नहीं। क्रांति अन्याय के विरुद्ध न्याय की पुकार है।"

हालांकि, वोहरा उत्पीड़क और उत्पीड़ितों की हिंसा में अंतर करते हुए इस जटिल नैतिक मुद्दे की सूक्ष्म समझ प्रदान करते हैं। उनके अनुसार, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्पीड़न के अधीन रहने वाला औपनिवेशिक नागरिक आत्मविश्वास और पहचान खोने लगता है। उत्पीड़क की निरंतर प्रतीकात्मक और शारीरिक हिंसा से पीड़ित आबादी में गंभीर चिंता और भय उत्पन्न होता है। वोहरा के अनुसार, क्रांतिकारी हिंसा "...उत्पीड़कों के दिलों में भय उत्पन्न करती है, उत्पीड़ित जनता में प्रतिशोध और मुक्ति की आशा जगाती है, डगमगाते लोगों को साहस और आत्मविश्वास प्रदान करती है, शासक वर्ग की श्रेष्ठता के भ्रम को तोड़ती है और दुनिया की नजरों में पीड़ित जाति का दर्जा बढ़ाती है।"

यह दस्तावेज़ सिद्ध करता है कि वे वैचारिक मोर्चे पर भी अत्यंत प्रखर थे। इस ऐतिहासिक परचे को गुप्त रूप से छपवाया गया और 26 जनवरी, 1930 को पूरे भारतवर्ष में एक साथ वितरित किया गया। इस लेख ने तत्कालीन बौद्धिक जगत को हिलाकर रख दिया और सर्वसाधारण के मानस में क्रांतिकारियों के प्रति सम्मान को कई गुना बढ़ा दिया। भारतीय विद्वानों द्वारा बड़े पैमाने पर उपेक्षित इस दस्तावेज़ को पश्चिमी शोधकर्ता "आधुनिक आतंकवाद" पर अक्सर उद्धृत करते हैं। पश्चिमी साम्राज्यवादी विचारों से प्रेरित होकर, वे भारतीय क्रांतिकारियों को आधुनिक आतंकवादियों का अग्रदूत मानते हैं, और औपनिवेशिक शासन की आतंकवादी प्रकृति को पूरी तरह से नजरअंदाज कर देते हैं।

वोहरा ने प्रसिद्ध मार्क्सवादी मनोचिकित्सक फ्रांत्ज़ फैनन से पहले ही यह विचार व्यक्त कर दिया था, जिन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द रैचेड ऑफ द अर्थ' में गुलाम जाति या लोगों के लिए क्रांतिकारी हिंसा की मुक्तिदायक भूमिका के बारे में लिखा था। वोहरा के लिए क्रांति का अर्थ केवल अंग्रेजों का तख्तापलट नहीं था, बल्कि भारतीय पूंजीपति और जमींदार वर्ग को भी हटाना था, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य के साथ मिलकर भारतीय जनता का शोषण करते थे। उनके अनुसार, क्रांति का अर्थ "केवल स्वामी परिवर्तन से कहीं अधिक" होगा, क्योंकि इससे "एक नई व्यवस्था, एक नए राज्य का जन्म" होगा। इसका अर्थ था आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों का पूर्ण रूपांतरण। एचएसआरए के घोषणापत्र में भी इसी प्रकार के तर्क दिए गए थे।

आधुनिक इतिहासकारों ने भगवती चरण बोहरा के अवदान का मूल्यांकन व्यापक परिप्रेक्ष्य में किया है। प्रो. बिपन चंद्र ने बोहरा जी को HSRA का वैचारिक स्तंभ माना और रेखांकित किया कि वे भारत में समाजवाद के प्रारंभिक विचारकों में से एक थे। इरफान हबीब के अनुसार, बोहरा और भगत सिंह का लेखन यह दर्शाता है कि भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन केवल भावुकता पर नहीं, बल्कि मार्क्सवादी अध्ययन पर आधारित था। यशपाल (संस्मरण) अपनी

पुस्तक 'सिंहावलोकन' में लिखते हैं कि भगवती भाई में अद्भुत धैर्य था। वे गंभीर से गंभीर संकट में भी शांत रहकर योजना बनाने में माहिर थे।

प्रमुख रणनीतिक अभियान एवं गुप्त सक्रियता

भगवतीचरण वोहरा केवल एक विचारक ही नहीं थे, बल्कि वे संकट के समय योजना को क्रियान्वित करने में भी उतने ही निपुण थे। ब्रिटिश खुफिया विभाग के दस्तावेज़ों से स्पष्ट होता है कि वोहरा जी पुलिस की पैनी नज़र से बचकर देशव्यापी नेटवर्क स्थापित करने में माहिर थे। उनके जीवन के कुछ अत्यंत साहसिक और ऐतिहासिक अभियान निम्न हैं:

क). सांडर्स वध और पुलिस को चकमा देना: लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिए जब भगतसिंह, राजगुरु और आज़ाद ने पुलिस उपाधीक्षक सांडर्स को गोलियों से उड़ा दिया, तो पूरे लाहौर को ब्रिटिश पुलिस और सीआईडी ने घेर लिया। चप्पे-चप्पे पर तलाशी ली जा रही थी। ऐसे जटिल समय में, जब एक्शन लेने वाले नायकों को लाहौर से सुरक्षित निकालना असंभव लग रहा था, भगवतीचरण (जो उस समय कलकत्ता में थे) के परिवार ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उनकी पत्नी दुर्गा भाभी ने अपने 3 वर्षीय पुत्र शचि बोहरा को साथ लेकर एक अभूतपूर्व स्वांग रचा। भगतसिंह ने अपने केश कटवाकर एक संभ्रांत अंग्रेज बाबू का रूप धरा, दुर्गा भाभी उनकी पत्नी बनीं और राजगुरु उनके नौकर बने। चंद्रशेखर आज़ाद एक साधु के भेष में उसी ट्रेन के तीसरे दर्जे में बैठे। इस साहसिक योजना के माध्यम से पुलिस की आँखों में धूल झोंककर सभी क्रांतिकारी सुरक्षित लाहौर से बाहर निकल गए।

ख). वाइसराय की ट्रेन उड़ाने की योजना: सांडर्स हत्याकांड और दिल्ली असेंबली बम कांड के बाद, ब्रिटिश हुकूमत को यह अहसास कराना जरूरी था कि क्रांतिकारियों के हौसले पस्त नहीं हुए हैं। भगवतीचरण और यशपाल ने वाइसराय लॉर्ड इरविन की ट्रेन को उड़ाने की योजना बनाई। दिल्ली के पास निजामुद्दीन स्टेशन के पास एक खंडहर में बिजली के तारों और बैटरी के माध्यम से बम को संबद्ध किया गया। जैसे ही ट्रेन गुजरी, स्विच दबाया गया। यद्यपि वाइसराय का डिब्बा आगे निकल जाने के कारण वह बच गया, लेकिन भोजनयान का एक हिस्सा उड़ गया। इस घटना ने ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां उड़ा दीं।

ग). जलगांव जेल का जोखिम भरा मिशन: भगवतीचरण खतरों से खेलने के आदी थे। जब उनके साथी भगवानदास माहौर और सदाशिवराव मलकापुरकर विस्फोटक ले जाते हुए भुसावल स्टेशन पर पकड़े गए और जलगांव जेल में बंद कर दिए गए, तो उन्होंने जेल से संदेश भेजा कि सरकारी गवाह बन चुके गद्दार फणींद्र घोष और जयगोपाल को अदालत में उड़ाने के लिए उन्हें एक रिवॉल्वर की आवश्यकता है। चंद्रशेखर आज़ाद ने इस बेहद खतरनाक काम के लिए भगवतीचरण को चुना। स्वयं अपने खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट होने के बावजूद, भगवतीचरण ने एक वकील का भेष बदला और कानूनी परामर्श के बहाने जलगांव जेल के भीतर जा पहुंचे। उन्होंने अत्यंत कुशलता से कमांडर-इन-चीफ आज़ाद का संदेश बंदी क्रांतिकारियों तक पहुँचाया और उन्हें निर्देश दिया कि यदि दोनों गद्दारों को मारना संभव न हो, तो पहले फणींद्र घोष को निशाना बनाया जाए क्योंकि वह केंद्रीय समिति का सदस्य होने के कारण पार्टी के कई अहम राज जानता था।

दुर्गा भाभी: क्रांति पथ पर सहगामी सहधर्मिणी

भगवतीचरण वोहरा के क्रांतिकारी जीवन का उल्लेख उनकी जीवनसंगिनी दुर्गा देवी (दुर्गा भाभी) के बिना अधूरा है। दुर्गा भाभी असाधारण सौंदर्य, शालीनता और उससे भी बढ़कर अद्वितीय शौर्य की प्रतिमूर्ति थीं। वे केवल एक पारंपरिक पत्नी नहीं थीं, बल्कि पार्टी की सक्रिय सदस्य थीं। जब क्रांतिकारी आंदोलन को धन की कमी का सामना करना पड़ा, तो दुर्गा भाभी ने सहर्ष अपनी ₹500 की जमापूंजी (जो उस समय एक बड़ी राशि थी) और अपने गहने पार्टी फंड में दान कर दिए। लाहौर से भगतसिंह को सुरक्षित निकालने के बाद जब वे कलकत्ता पहुँचीं, तो भगवतीचरण ने अत्यंत गर्व के साथ उनसे कहा था:

> "दुर्गा! मैं तो तुम्हें एक देहातिन बहू समझे हुए था, तुमने तो स्वयं को एक क्रांतिकारिणी के रूप में प्रस्तुत करके मुझे गर्वित होने का अवसर दिया है। आज तुम सही अर्थों में मेरी पत्नी सिद्ध हुई हो।"
> भगवतीचरण के संपूर्ण क्रांतिकारी जीवन को स्थायित्व और शक्ति दुर्गा भाभी के इसी निस्वार्थ सहयोग से मिली थी।

रावी तट का महाविस्फोट: सर्वोच्च बलिदान (28 मई, 1930)

वोहरा ने एक संयमी जीवन व्यतीत किया और नौजवान भारत सभा के आदर्श वाक्य, "सेवा, कष्ट, बलिदान" को साकार रूप दिया। वे हमेशा अपने पास मौजूद धन या अन्य संसाधनों को इस कार्य के लिए दान करने के लिए तत्पर रहते थे। अपने साथी को याद करते हुए, बेजॉय कुमार सिन्हा ने लिखा कि वोहरा अक्सर कहते थे: "मैं ऐसी जगह और ऐसे तरीके से मरना चाहता हूँ कि किसी को पता न चले और कोई आंसू न बहाए।" एक क्रूर त्रासदी में, इतिहास ने उनकी इच्छा का पालन किया।

वर्ष 1930 के मई महीने के अंत में, जब लाहौर भीषण गर्मी और लू की लपटों से जल रहा था, चंद्रशेखर आज़ाद के नेतृत्व में क्रांतिकारी दल लाहौर की सेंट्रल जेल में बंद भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को छुड़ाने की एक विशाल और अंतिम योजना पर काम कर रहा था। इस 'एक्शन' की तारीख 1 जून, 1930 निश्चित की गई थी। इस योजना की सफलता के लिए उच्च क्षमता वाले बमों का परीक्षण अनिवार्य था। 28 मई, 1930 को सुबह लगभग 11 बजे, भगवतीचरण वोहरा, सुखदेव राज और विश्वनाथ वैशंपायन (बच्चन) साइकिलों से रावी नदी की ओर चल दिए। वे अपने साथ एक थैले में तरबूज और संतरों के बीच एक अत्यंत शक्तिशाली जीवित बम छुपाकर ले गए थे। रावी नदी के किनारे घने जंगल में एक उपयुक्त गड्ढा देखकर वे परीक्षण के लिए रुके।

भगवतीचरण ने जब बम को हाथ में लिया, तो पाया कि उसका पिन या घोड़ा कुछ ढीला था। वैशंपायन और सुखदेव राज ने खतरे को भांपते हुए उनसे आग्रह किया कि आज परीक्षण टाल दिया जाए और अगले दिन दूसरा बम लाया जाए। परंतु 1 जून के एक्शन की चिंता में डूबे भगवतीचरण ने कहा: "आज 28 मई हो गई है। 1 जून को एक्शन करना है। यदि बम का परीक्षण आज नहीं करेंगे तो कैसे काम चलेगा; यह काम किसी भी कीमत पर टाला नहीं जा सकता।" जब साथियों ने खुद बम चलाने की जिद की, तो उन्होंने बड़े वात्सल्य से कहा कि यदि तुम लोगों को कुछ हो गया तो मैं आज़ाद भैया को मुँह दिखाने लायक नहीं रहूँगा। उन्होंने साथियों को दूर हटा दिया और एक चट्टान की ओट लेकर जैसे ही बम का पिन खींचने के लिए हाथ ऊपर उठाए, वैसे ही हाथ में ही एक भयानक विस्फोट हो गया।

दुर्घटना में आई चोटों का विवरण

- **दाहिना हाथ:** कलाई के पास से पूरा उड़ गया था।
- **बायाँ हाथ:** उँगलियाँ पूरी तरह क्षत-विक्षत हो गई थीं।
- **मुख्य चोट:** पेट में गहरा घाव हो गया था और आँतें बाहर आ गई थीं।
- **चेहरा:** मस्तक और चेहरा गहरे घावों से लहूलुहान था।

सुखदेव राज भी घायल हुए थे, परंतु वे नगर की ओर डॉक्टर और सहायता लेने भागे। वैशंपायन वहीं रुककर नदी से भीगे कपड़े से

भैया का मस्तक पोंछते रहे और संतरे की कलियाँ उनके मुँह में डालते रहे। असह्य वेदना के बीच भी इस महानायक के चेहरे पर एक दिव्य मुस्कान थी। मृत्यु के ठीक पहले उनके अंतिम शब्द उनकी राष्ट्रभक्ति की पराकाष्ठा थे: "यही दुःख है, भगतसिंह के छुड़ाने में सहयोग न दे सकूंगा... काश, यह मृत्यु दो दिन बाद होती! मेरे चले जाने के बाद भी योजना स्थगित मत करना। दुर्गा को पार्टी में ही रखना... अपना आंदोलन मजबूती से चलाते रहना।" और इसके बाद भारत मां का यह लाडला हमेशा के लिए सो गया।

बलिदान के बाद: कोठी का दृश्य और अंतिम संस्कार

जब यशपाल और वैशंपायन टैक्सी लेकर घटनास्थल पर पहुँचे, तब तक अंधेरा हो चुका था और भगवतीचरण शहीद हो चुके थे। सुरक्षा कारणों और पुलिस के जाल को देखते हुए उनके शव को शहर लाना असंभव था। क्रांतिकारियों ने राष्ट्र की इस अमूल्य निधि के पार्थिव शरीर को एक सफेद चादर में लपेटा, उसमें भारी पत्थर बांधे और अत्यंत भारी मन से रावी के अथाह, शीतल जल में विसर्जित कर दिया। न कोई विदाई की धुन बजी, न कोई राजकीय सम्मान मिला, बस रावी की लहरों ने अपने इस बेटे को गोद में ले लिया।

बहावलपुर रोड स्थित कोठी पर जब यह समाचार पहुँचा, तो वहाँ सन्नाटा पसर गया। दल के कड़े कमांडर-इन-चीफ चंद्रशेखर आज़ाद, जो कभी विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते थे, फूट-फूटकर रो पड़े। साथियों ने आज़ाद को पहली बार इस तरह रोते देखा था। परंतु दुर्गा भाभी संज्ञाशून्य थीं। वे रो भी नहीं सकती थीं, क्योंकि उनके विलाप करने से पूरी योजना का भंडाफोड़ हो जाता और बाकी साथियों के प्राण संकट में पड़ जाते। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत वेदना को देश की वेदी पर मौन रहकर बलिदान कर दिया।

ऐतिहासिक मूल्यांकन और प्रासंगिकता

क्रांतिकारी जयदेव कपूर के शब्दों में, "अगर चंद्रशेखर आज़ाद संघ के कमांडर थे, तो भगवतीचरण उसके मार्ग-निर्देशक थे।" आज़ाद सैन्य मोर्चे पर अद्वितीय थे, तो भगवतीचरण सैद्धांतिक मोर्चे पर अप्रतिम थे। वे अक्सर जीवन के एकांत क्षणों में कवि रामप्रसाद 'बिस्मिल' की पंक्तियाँ गुनगुनाया करते थे, जो उन पर पूरी तरह चरितार्थ हुईं:

> "मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक,
> मातृभूमि हित शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।"

भगवतीचरण वोहरा का दर्शन केवल ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने तक सीमित नहीं था, वे एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे जो वर्गहीन हो, जहाँ किसी इंसान द्वारा किसी इंसान का शोषण न हो। उनका 'बम का दर्शन' और 'नौजवान भारत सभा का घोषणा-पत्र' आज भी राजनीतिक विचारकों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते हैं।

उपसंहार

समेकित अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भगवती चरण बोहरा का मूल्यांकन केवल एक 'बम बनाने वाले क्रांतिकारी' के रूप में करना उनके साथ ऐतिहासिक अन्याय होगा। वे एक उत्कृष्ट लेखक, समाजवादी विचारक और अद्वितीय संगठनकर्ता थे। उन्होंने 'बम के दर्शन' के माध्यम से वैचारिक रूप से सिद्ध किया कि सशस्त्र क्रांति साम्राज्यवादी सत्ता के शोषण के विरुद्ध शोषितों का अंतिम और न्यायसंगत हथियार है। दुर्गा भाभी के साथ मिलकर उनका पूरा परिवार स्वतंत्रता आंदोलन में होम हो गया, जो भारतीय इतिहास में त्याग की पराकाष्ठा है। भगवतीचरण वोहरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आकाश के वह जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं, जो इतिहास के पन्नों में भले ही उतनी जगह न पा सके हों जिसके वे हकदार थे, परंतु क्रांतिकारी आंदोलन की नींव में वे एक ऐसी अमर आधारशिला बनकर स्थापित हैं जिसके बिना आज़ादी के इतिहास की इमारत अधूरी है। 28 मई, 1930 को रावी के तट पर हुआ वह विस्फोट महज़ एक दुर्घटना नहीं थी, बल्कि वह राष्ट्र की स्वाधीनता के यज्ञ में एक महान पुरोहित की पूर्णाहूति थी। उनका जीवन, उनकी वैचारिकी और उनका सर्वोच्च बलिदान युगों-युगों तक भारतीय जनमानस को राष्ट्र के प्रति सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा देता रहेगा।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह भगत, मैं नास्तिक क्यों हूं, प्रकाशक प्रभाकर प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2025
2. शुक्ल, आर. एल., आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता-प्राप्ति और देश-विभाजन तक) हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्ष 2006
3. चन्द्र बिपिन, मुखर्जी मृदुला, मुखर्जी आदित्य, क. न. पनिकर, महाजन सुचेता, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली वर्ष 2005
4. दुबे, सत्यनारायण, इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, इंदौर
5. व्यास लल्लनप्रसाद, भारत के महान् क्रांतिकारी, प्रकाशक गंगा पुस्तक माला कार्यालय लखनऊ, वर्ष 1966
6. निगम नंदकिशोर, बलिदान (चंद्रशेखर आजाद की रोमांचकारी जीवनी), मुद्रक: नया हिंदुस्तान प्रेस, चांदनी चौक, दिल्ली-६
7. माहौर, डॉ. भगवानदास, काकोरी शहीद स्मृति, प्रकाशक काकोरी शहीद अर्धशताब्दी समारोह समिति लखनऊ
8. श्री कृष्ण 'सरल', क्रांतिकारी कोश (तृतीय खंड) प्रकाशक प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 2012
9. खुल्लर, के. के., आजादी की मशालें, प्रभात प्रकाशन दिल्ली
10. वोहरा, भगवतीचरण, बम का दर्शन, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का आधिकारिक घोषणा-पत्र एवं वैचारिक दस्तावेज़
11. यशपाल (1951). सिंहावलोकन (खंड 1, 2 और 3). विप्लव प्रकाशन, लखनऊ
12. वर्मा, शिव (2005). क्रांतिकारियों के संस्मरण, राहुल फाउंडेशन, लखनऊ।